शब्द पर कब्ज़ा उनका

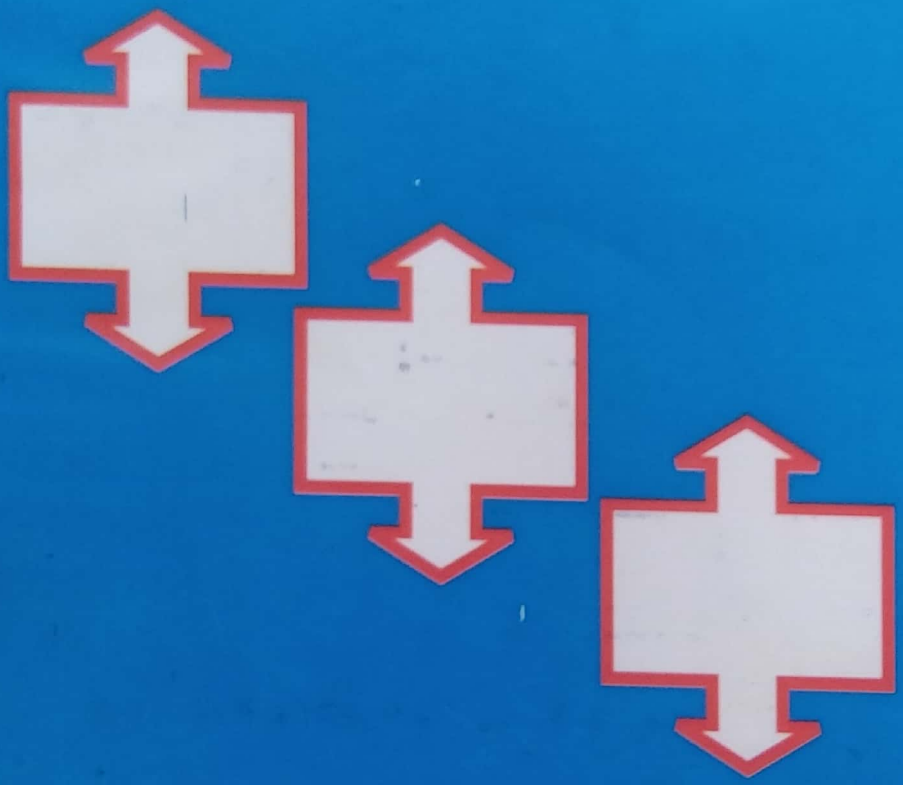

डॉ परशुराम शुक्ल विरही

Scanned with OKEN Scanner

सादर भेंट

27-5-2016

शब्द पर कब्जा उनका

डॉ. परशुराम शुक्ल विरही

Scanned with OKEN Scanner

© कॉपीराइट – कवि के पास
प्रथम संस्करण –2016

प्रकाशक – मध्यप्रदेश लेखक संघ भोपाल(म.प्र.)
मुद्रण – जय श्रीराम ऑससेट,भिण्ड (म.प्र.)
मूल्य – 120/–

Poetry - Shabd Par Kabja Unka
POET - PARASHURAM SHUKLA VIRAHI
PRICE - 120/-

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रम

प्रथम खण्ड

9– सूर्य ओ प्रेमी
12– सूरज रसोइया
13– सूरज बाबा
15– तेजेश्वर
16– तेज पुरूष
17– सूरज बहुरूपिया
19– तेजोदीप्त
21– सूरज का निवेदन
22– आदित्य
23– सूर्य, दिनकर
24– सूर्य, हिरण्य गर्भ
25– ज्योति पुंज
26– सूर्य,. ऋतभी

द्वितीय खण्ड

28– प्यार : जीने का विश्वास (गीत)
29– कोई असर नहीं हो जिसका (गीत)
30– चाँदनी एहसास (नवगीत)
31–कुछ रह जाता है (नवगीत)
33– हेमंती वसंत (नवगीत)
34– वसंत की बात (नवगीत)
35– नये साल में (ग़ज़ल)
36– गीतकार अपनी कहे (गीत)
37– वसंत को राम, राम (नवगीत)
38– नया वर्ष (गीत)
39– रंग की माया (गीत)
40– कुछ लेने आया (गीत)

Scanned with OKEN Scanner

41– नहीं कोई बात (गीत)
42– वसंत (गीत)
43– शिशिर जैसी हवा में (ग़ज़ल)
44– पानी बरसा रे (गीत)

तृतीय खण्ड

46– जूझना अँधेरे से
47– मृत्यु पर
50– खतरा
52– सुपारी
54– मृत्यु भय
56– दिया
58– वरिष्ठ नागरिक की चाह
61– सुबह,शाम की तरह
62– मौत का डर
63– सवाल
64– कुछ दोहे
65– अँधेरा दिन
66– पानी कहाँ गया
67– गीत और आँसू
68– आतंकवाद के विरूद्ध
70– देखते देखते
71– मरने के दिन
72– उछालना शब्द

Scanned with OKEN Scanner

डॉ. परशुराम शुक्ल विरही

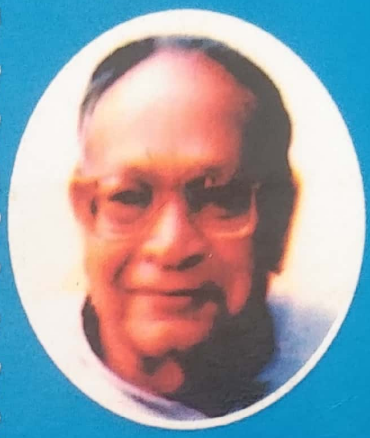

उत्तरप्रदेश के ललितपुर जिले के तालबेहट नगर में 25 मार्च सन् 1929 को जन्मे डॉ0 परशुराम शुक्ल विरही की स्कूली शिक्षा तालबेहट और ललितपुर में हुई। सन् 1947 मे आप कानपुर के तत्कालीन डी0ए0जी0 कॉलेज में प्रविष्ट हुए। उच्च शिक्षा की सभी उपाधियाँ आपने आगरा विश्व विद्यालय से प्राप्त की। पी0एच0डी0 होने के पश्चात सन् 1962 में आपने म0प्र0 की उच्च शिक्षा सेवा में प्रवेश किया और शिवपुरी के शिवपुरी महाविद्यालय में पदस्थ हुए। सेवा निवृत्ति तक आप शिवपुरी के स्नातकोत्तर महाविद्यालय में ही विभिन्न पदों पर रहकर अध्यापन कार्य करते रहे और शोध कार्य का मार्ग दर्शन करते रहे।

वरिष्ठ पीढी के रचनाधर्मी डॉ0 विरही की रचनायें पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती है और रेडियो तथा टी.वी. से प्रसारित होती रहती है। सन् 2009 में दूरदर्शन के भारती चैनल से श्री बालस्वरूप राही के सम्पादकत्व में 26 समकालीन कवियों की कविमाला 'गूंजते स्वर" के नाम से प्रसारित हुई थी, जिसके एक कवि डॉ0 परशुराम विरही भी थे। प्रत्येक कवि का एपीसोड 30 मिनट का होता था।

डॉ0 विरही की कविताओं में युग–जीवन की संवेदनाओं की सूक्ष्म पकड़ है। उनका सम्पूर्ण काव्य–साहित्य की मौलिक भावाभिव्यक्ति, नवीन शिल्प–विधान जीवन के प्रति स्वस्थ दृष्टि कोण, अनूठे बिम्ब, प्रेरक सन्देश और गहन–अनुभूतियों की प्रेषणीयता आकर्षित करती है। उन्होंने सन् 1945 से कविता लिखना प्रारम्भ कर दिया था। अब तक उनके सब मिलाकर 32 ग्रन्थ प्रकाशित हो चुके हैं। इनमें 22 मौलिक ग्रन्थ है, 3 अनुदित ग्रन्थ है और 7 सम्पादित है। इनके अतिरिक्त 11 ग्रन्थों के विरही जी सहयोगी रचनाकार है। आपके ग्रन्थों में कविता संकलनों की संख्या अधिक है। इनमें अनथके प्राण, ओ द्रष्टामन और अपने हिस्से का उजाला चर्चित रहे, सम्पादित ग्रन्थों में सन् सत्तावन की क्रांति के पत्र महत्वपूर्ण है।

मध्यप्रदेश लेखक संघ (भोपाल) के अक्षर आदित्य सम्मान के अतिरिक्त आपको हिन्दी सेवी सहस्राब्दी सम्मान (दिल्ली) डॉ. शंकरदयाल शर्मा सृजन सम्मान (भोपाल), ईसुरी पुरस्कार (भोपाल) मैथिली शरण गुप्त पुरस्कार (लखनऊ) साहित्य गौरव सम्मान (जबलपुर) अक्षर आदित्य सम्मान (भोपाल) साहित्य मार्तण्ड सम्मान (ललितपुर) शोम सम्मान (कानपुर) अखिल भारतीय बुन्देली सम्मान (कोलारस) आदि अनेक सम्मान मिल चुके है।

बरकत उल्ला विश्वविद्यालय भोपाल और जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर से शोधार्थियों ने डॉ. विरही के साहित्यिक अवदान पर पी–एच.डी. उपाधियाँ प्राप्त की। साहित्य अकादमी दिल्ली के परिचय ग्रन्थ 'हूज हू ऑफ इण्डियन राइटर्स' के आप एक हस्ताक्षर है। लखनऊ से प्रकाशित हिन्दी सेवा संसार में भी आपका परिचय है।

प्रमोद भार्गव (कथाकार)

Scanned with OKEN Scanner